# पं. दीनदयाल का अंत्योदय का विचार और इसका बी.पी.एल. व अंत्योदय परिवारों पर प्रभाव: हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन

**नीरज शर्मा और जोगिंदर सिंह सकलानी**

'अंत्योदय' का दर्शन, जिसका अर्थ है 'अंतिम व्यक्ति का उत्थान', दीनदयाल उपाध्याय द्वारा समावेशी विकास और समतामूलक विकास के मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया गया था। उपाध्याय ने एक ऐसे सामाजिक-आर्थिक मॉडल की कल्पना की थी जो समाज के सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों के उत्थान को प्राथमिकता देता था और यह सुनिश्चित करता था कि राष्ट्रीय प्रगति की प्रक्रिया में वे पीछे न छूटें। 'एकात्म मानवदर्शन' के रूप में जानी जाने वाली उनकी विचारधारा ने आर्थिक समृद्धि और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन बनाकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सामंजस्यपूर्ण विकास पर बल दिया।

अंत्योदय का सार भारत की स्वतंत्रता के बाद की कल्याणकारी नीतियों, विशेषकर गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण पर केंद्रित योजनाओं में गहराई से समाया हुआ है। इनमें, अंत्योदय अन्न योजना सबसे गरीब परिवारों में भूख और कुपोषण को दूर करने के लिए बनाई गई एक प्रमुख पहल के रूप में उभर कर सामने आती है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) का व्यापक ढांचा खड़ा कर, दिसंबर, 2000 में शुरू की गई, 'अंत्योदय अन्न योजना' समाज के सबसे कमजोर वर्गों को अत्यधिक रियायती खाद्यान्न प्रदान करती है। यह योजना उपाध्याय के दृष्टिकोण के अनुरूप है क्योंकि यह सुनिश्चित करती है कि विकास का आर्थिक लाभ उन लोगों तक पहुँचे जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

हिमाचल प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य का अध्ययन करने पर ऐसे हस्तक्षेपों की आवश्यकता और भी स्पष्ट हो जाती है। अपने ऊबड़-खाबड़ भूभाग और मुख्यतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले इस राज्य को अपनी आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि हिमाचल प्रदेश ने मानव विकास संकेतकों में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी गरीबी और खाद्य असुरक्षा के क्षेत्र, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अभी भी मौजूद हैं। राज्य में अंत्योदय योजना का कार्यान्वयन इस बात का एक मूल्यवान उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे अंत्योदय सिद्धांत से प्रेरित कल्याणकारी कार्यक्रम जीवन को बदल सकते हैं।

## पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'अंत्योदय' का विचार

'अंत्योदय' पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया एक शब्द है जिसमें स्वामी विवेकानंद का आदर्श वाक्य 'नर सेवा नारायण सेवा', जैन आचार्य सामंत भद्र की अवधारणा 'सर्वोदय तीर्थ', रस्किन की 'अंत्योदय' की अवधारणा, महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित 'सर्वोदय' और सुकरात द्वारा दिया गया विचार 'सत्य साधना', सभी समाहित हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोषक शक्तियों, सामाजिक कुरीतियों और आडंबरों के विरोधी और एक समरस समाज के विचारक थे। 'अंत्योदय' का सिद्धांत अद्वैत है और नीति प्रकृति और समाज के बीच समन्वय है। अंत्योदय की भावना भारत के लगभग सभी धर्मग्रंथों में देखी जा सकती है। 'ईशावास्योपनिषद' का श्लोक है,

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

इसका भाव है कि भगवान निर्जीव और चेतन प्राणियों की संपूर्ण सृष्टि में मौजूद है। मनुष्य को अपनी सीमित जरूरत के अनुसार चीजों का उपभोग करना चाहिए, लेकिन उन्हें इस भावना के साथ इतना इकट्ठा नहीं कर लेना चाहिए कि यह सब मुझे मिलेगा या नहीं,तो ज्यादा ही संग्रह कर लिया। 'गीता शास्त्र' में भी 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' व 'सर्वभृत हितो रताः' में भी एकता और अंत्योदय की अनुभूति निहित है। उपाध्याय समग्र रूप से समाज के अंतिम व्यक्ति के प्रति हृदय से चिंतित रहे। उनका मानना था कि हमारा राष्ट्र तभी आगे बढ़ेगा जब अंतिम व्यक्ति का उदय होगा व सामाजिक प्रगति और देश की प्रगति केवल 'अंत्योदय' में निहित है। महान देशभक्त सन्यासी स्वामी विवेकानंद ने भारत की धार्मिक सोच को गरीबों तक ले जाने का काम किया। भारत में भुखमरी और गरीबी को देखकर उन्हें गहरा दुख हुआ और उन्होंने अपने उद्धार का लक्ष्य छोड़ गरीबों की सेवा को अपना लक्ष्य बना लिया। ऐसे लोग जो भारत के संसाधनों का उपयोग करके अमीर बन गए लेकिन गरीबों के लिए कोई दया नहीं थी, उन्हें देश का देशद्रोही कहा जाता था। महात्मा गांधी ने भी सोचने की इस परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया। यह सोच, जो समाजवाद के विचारों में लुप्त होती जा रही थी, बाद में इसका पुनरुद्धार कर पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा शिखर पर ले जाया गया। महात्मा गाँधी के आग्रह की बात गाँव की बहुल अर्थव्यवस्था थी और यह आर्थिक चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ही थे जो उसी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लाए थे, जिसके बारे में महात्मा गांधी भारत के सामने एक नए परिष्कृत रूप में बात करते थे। एक साक्षात्कार में सवालों के जवाब देते हुए श्री गुरु जी (माधव सदाशिवराव गोलवलकर) ने कहा कि समाज के सभी वर्गों को आगे ले जाने के लिए सहयोग से काम करने की जरूरत है। इस प्रकार सहयोग में कार्य करने के उपरान्त लाभ का वितरण भी सहयोग या सामूहिक रूप से किया जाना चाहिए ताकि सहयोग या समूह में कार्य करने की भावना जागृत हो और सभी एक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें। दीनदयाल चाहते थे कि गरीबी रेखा के नीचे वाले व्यक्ति और आर्थिक समृद्धि के शीर्ष पर व्यक्ति के बीच की आर्थिक असमानता कम हो। इसे ध्यान में रखते हुए, उनके द्वारा की गई पंचवर्षीय योजना के आलोचनात्मक विश्लेषण को पश्चिमी अवधारणा से प्रभावित तत्कालीन नीति निर्माताओं द्वारा खारिज कर दिया गया था। उन्होंने भारत में शुरू में लागू की गई दो पंचवर्षीय योजनाओं का वर्णन करते हुए कहा था कि ये योजनाएं भारतीय प्रकृति के खिलाफ हैं और उनमें कुछ सुधार का अनुरोध भी किया था, उनकी आशंकाएं सही साबित हुईं और समाजवादी अवधारणा पर आधारित योजना के कारण ये योजनाएं सफल नहीं हो सकीं। दीनदयाल जी हमेशा अंत्योदय के प्रति कृतसंकल्प थे। उन्होंने साफ कहा कि जिस दिन जनसंघ अंत्योदय की अवधारणा को खारिज करेगा, जनसंघ भंग हो जाएगा। दीनदयाल उपाध्याय का 'अंत्योदय' या 'अंतिम व्यक्ति का कल्याण', 'अभिन्न मानवतावाद' के उनके दर्शन में निहित है। यह विचारधारा एक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की कल्पना करती है जहां सबसे वंचित व्यक्तियों के विकास को प्राथमिकता दी जाती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विकास समग्र और समावेशी है। पश्चिमी आर्थिक मॉडल के विपरीत जो मुख्य रूप से पूंजी संचय या राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्थाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उपाध्याय की दृष्टि हाशिए पर रहने वाले लोगों के उत्थान के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सामंजस्य और नैतिक शासन को एकीकृत करती है।

'अंत्योदय' शब्द समाज के सबसे कमजोर और वंचित सदस्यों के उत्थान का प्रतीक है। उपाध्याय के अनुसार, सच्ची प्रगति को कुछ लोगों की संपत्ति से नहीं बल्कि सबसे गरीब लोगों की भलाई से मापा जाता है। उन्होंने एक विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था की वकालत की जहां स्थानीय समुदाय आर्थिक और सामाजिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता और स्थायी आजीविका पर जोर देते हैं।

## अंत्योदय के प्रमुख सिद्धांत

आर्थिक विकास को सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयामों से अलग नहीं किया जाना चाहिए। विकास नीतियों को मानवीय मूल्यों को आर्थिक प्रगति के साथ एकीकृत करना चाहिए। आर्थिक नीतियों को केंद्रीकृत संरचनाओं पर निर्भरता को कम करने के लिए स्थानीय समुदायों, लघु उद्योगों और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को सशक्त बनाना चाहिए। आर्थिक विकास के लाभ समाज में अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए, जिससे संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित हो सके। सरकार को एक नियंत्रक के बजाय एक सूत्रधार के रूप में कार्य करना चाहिए, यह सुनिश्चित करना कि नीतियां हाशिए के दिमाग की भलाई के साथ तैयार की गई हैं। रोजगार के अवसर प्रदान करने और ग्रामीण-शहरी प्रवास को कम करने के लिए कृषि, कुटीर उद्योगों और लघु-स्तरीय व्यवसायों को मजबूत किया जाना चाहिए। उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन ने पूंजीवादी शोषण और समाजवादी राज्य नियंत्रण दोनों को खारिज कर दिया, तीसरा तरीका प्रस्तावित किया जहां आर्थिक प्रगति नैतिक शासन, सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक कल्याण के साथ जुड़ी हुई है। इस विचारधारा ने भारत में कई कल्याणकारी नीतियों का आधार बनाया, विशेष रूप से ग्रामीण विकास, खाद्य सुरक्षा और रोजगार सृजन को लक्षित करने वाली। अंत्योदय भारत की कल्याणकारी नीतियों में अंत्योदय के सिद्धांत स्वतंत्रता के बाद विभिन्न सरकारी नीतियों में परिलक्षित हुए हैं। उपाध्याय के दृष्टिकोण के अनुरूप उल्लेखनीय कार्यक्रम शामिल हैं:

## एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी)

एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी) 1978-79 में शुरू किया गया था और 1980 में भारत सरकार द्वारा रोजगार प्रदान करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए देश भर में विस्तारित किया गया था। ग्रामीण गरीबों के बीच। योजना का प्राथमिक उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों को आय-सृजन करने वाली संपत्ति और कौशल प्रदान करके ग्रामीण गरीबी को कम करना था।

आईआरडीपी के उद्देश्य परिसंपत्ति वितरण, सब्सिडी और बैंक क्रेडिट के माध्यम से ग्रामीण गरीबों को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना। छोटे और सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूरों, कारीगरों और अनुसूचित जाति/जनजाति (एससी/एसटी) के उत्थान के लिए। ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी आय सृजन सुनिश्चित करना। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कृषि, लघु उद्योग और सेवाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत करना। आईआरडीपी की चुनौतियां और कमियां बिचौलियों और खराब शासन के कारण प्रायः लाभार्थियों तक धनराशि नहीं पहुंचती थी। लाभार्थियों को वित्तीय सहायता मिली लेकिन उत्पादक उपयोग के लिए पर्याप्त कौशल की कमी थी। खराब ट्रैकिंग और मूल्यांकन के कारण कार्यान्वयन में अक्षमताएं हुईं। बाजार की बाधाओं और निरंतर समर्थन की कमी के कारण कई लाभार्थियों ने अपने उपक्रमों को बनाए रखने के लिए संघर्ष किया।

## दीनदयाल अंत्योदय योजना (DAY)

दीनदयाल अंत्योदय योजना (DAY) भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य कौशल विकास, स्वरोजगार और आजीविका को बढ़ावा देना है। यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन के साथ संरेखित है, जो समाज में अंतिम व्यक्ति (अंत्योदय) के उत्थान पर जोर देता है।

## दीनदयाल अंत्योदय योजना के उद्देश्य:

स्व-रोजगार और कौशल विकास को बढ़ावा देकर शहरी और ग्रामीण गरीबों की आजीविका में सुधार करना। स्थायी आजीविका के अवसरों के माध्यम से हाशिए के वर्गों को सशक्त बनाना। महिलाओं, युवाओं और वंचित समूहों को आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए सहायता प्रदान करना। उद्यमशीलता कौशल, नेतृत्व और वित्तीय साक्षरता विकसित करना।

## समकालीन भारत में अंत्योदय की प्रासंगिकता

आर्थिक प्रगति के बावजूद, भारत में गरीबी, बेरोजगारी और खाद्य असुरक्षा गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अंत्योदय के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे समावेशी विकास, जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण और नैतिक शासन पर ज़ोर देते हैं। उपाध्याय के दर्शन से प्रेरित 'अंत्योदय अन्न योजना' इस बात का एक व्यावहारिक उदाहरण है कि कैसे लक्षित कल्याणकारी योजनाएँ सबसे गरीब लोगों के जीवन को बदल सकती हैं।

निष्कर्षतः उपाध्याय का अंत्योदय का दृष्टिकोण भारत के नीतिगत ढाँचे में एक मार्गदर्शक शक्ति बना हुआ है। मानव-केंद्रित विकास, आर्थिक न्याय और समुदाय-संचालित प्रगति पर उनका ज़ोर समकालीन और भविष्य की कल्याणकारी पहलों के लिए एक आवश्यक आधारशिला का काम करता है। निम्नलिखित अनुभाग इस बात का पता लगाएंगे कि कैसे अंत्योदय अन्न योजना, विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में, इस दर्शन को मूर्त रूप देती है और गरीबी उन्मूलन तथा राजनीतिक जागृति में योगदान देती है।

## अंत्योदय अन्न योजना (AAY):

अंत्योदय अन्न योजना भारत सरकार द्वारा 25 दिसंबर, 2000 को एक लक्षित खाद्य सुरक्षा योजना के रूप में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य 'सबसे गरीब' लोगों को अत्यधिक रियायती दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराना था। इसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के विस्तार के रूप में डिज़ाइन किया गया था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि समाज के सबसे कमजोर वर्गों को आवश्यक पोषण और खाद्य सुरक्षा प्राप्त हो।

## अंत्योदय अन्न योजना के उद्देश्य

- आर्थिक रूप से सबसे वंचित परिवारों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करना।
- अत्यधिक रियायती दर पर खाद्यान्न तक पहुँच सुनिश्चित करना, जिससे गरीब परिवारों पर वित्तीय बोझ कम हो।
- विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में भूख और कुपोषण का मुकाबला करना।
- दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए AAY को व्यापक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के साथ एकीकृत करना।

## अंत्योदय की प्रमुख विशेषताएँ

- राज्य सरकारों द्वारा "सबसे गरीब" के रूप में पहचाने गए परिवार, जिनमें भूमिहीन मजदूर, विधवाएँ, विकलांग व्यक्ति और हाशिए पर रहने वाले समुदाय शामिल हैं।
- लाभार्थियों को प्रति माह 35 किलोग्राम खाद्यान्न मिलता है, जिसमें चावल ₹3 प्रति किलोग्राम और गेहूँ ₹2 प्रति किलोग्राम की दर से उपलब्ध है।
- राज्य सरकारें लाभार्थियों की पहचान करने और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत उचित मूल्य की दुकानों (एफपीएस) के माध्यम से खाद्यान्न वितरित करने के लिए ज़िम्मेदार हैं।
- नियमित मूल्यांकन और सर्वेक्षण प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हैं और लीकेज को रोकते हैं।

अंत्योदय अन्न योजना ने सबसे गरीब परिवारों में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। अगला भाग हिमाचल प्रदेश में इसके कार्यान्वयन की पड़ताल करता है, और गरीबी दूर करने और राजनीतिक सशक्तिकरण में इसकी प्रभावशीलता का आकलन करता है।

## हिमाचल प्रदेश में अंत्योदय अन्न योजना के लाभार्थी:

अगस्त 2025 में हिमाचल प्रदेश में 'अंत्योदय अन्न योजना' के परिवारों/राशन कार्डधारकों की कुल संख्या 165569 थी, जिनमें से कुल 752769 एनएफएसए कार्डधारक थे, जो 21.98% है और भारत के सभी राज्यों में एनएफएसए श्रेणी में अंत्योदय अन्न योजना कार्डधारकों का तीसरा सबसे बड़ा प्रतिशत है। यह लक्षद्वीप (24.06%) और अंडमान-निकोबार (22.13%) के बाद है। अंत्योदय अन्न योजना राशन कार्डधारकों के परिवारों में लाभार्थियों की कुल संख्या 685180 है, जो एनएफएसए के अंतर्गत आने वाले कुल सदस्यों की संख्या का 22.90% है और अंडमान-निकोबार (21.40%) और लक्षद्वीप (20.05%) से आगे निकलकर सबसे बड़ा प्रतिशत है।

## अंत्योदय अन्न योजना परिवारों पर 'अंत्योदय अन्न योजना' के विभिन्न प्रभाव

1. **आर्थिक प्रभाव और गरीबी उन्मूलन**: हिमाचल प्रदेश में 'अन्या योजना' का सबसे महत्वपूर्ण योगदान गरीब परिवारों को प्रदान की जाने वाली आर्थिक राहत है। इस योजना के तहत, पात्र परिवारों को अत्यंत रियायती दरों पर खाद्यान्न मिलता है, जिससे उन्हें अपने सीमित वित्तीय संसाधनों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आवास जैसी अन्य आवश्यक आवश्यकताओं के लिए आवंटित करने में मदद मिलती है। यह देखते हुए कि हिमाचल प्रदेश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि और दिहाड़ी मजदूरी में लगा हुआ है, यह योजना ऑफ-सीजन और आर्थिक मंदी के समय में वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसके अलावा, राज्य सरकार ने लक्षित लाभार्थियों तक खाद्यान्न पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को कुशलतापूर्वक लागू किया है। अन्या योजना ने रियायती दरों पर आवश्यक अनाज उपलब्ध कराकर खाद्य असुरक्षा को काफी कम कर दिया है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि कमजोर आबादी भूख से पीड़ित न हो। भोजन पर घरेलू खर्च को कम करके, अन्या योजना परिवारों को अपने सीमित वित्तीय संसाधनों को स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आजीविका में वृद्धि जैसी अन्य आवश्यक आवश्यकताओं के लिए आवंटित करने में सक्षम बनाती है।

**2. सामाजिक प्रभाव**: अन्या योजना ने समाज के सबसे कमजोर वर्गों में भूख और कुपोषण की घटनाओं को कम करके सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित करके, इस योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर गरीबी-जनित पलायन को कम करने में मदद की है। जो परिवार अन्यथा दैनिक भरण-पोषण के लिए संघर्ष करते थे, वे अब अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसके अलावा, इस योजना ने अप्रत्यक्ष रूप से लैंगिक समानता में सुधार लाने में भी योगदान दिया है। कई घरों में, महिलाएँ खाद्य सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार हैं और 'अंत्योदय अन्न योजना' द्वारा अनाज की सुनिश्चित आपूर्ति ने उनके बोझ को कम करने में मदद की है। इसके अतिरिक्त, पर्याप्त भोजन की उपलब्धता ने बच्चों और गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया है, जिससे अंततः समग्र पारिवारिक कल्याण में सुधार हुआ है।

**3. पोषण संबंधी प्रभाव**: हिमाचल प्रदेश में, विशेष रूप से बच्चों और हाशिए के समुदायों में, कुपोषण एक बड़ी चिंता का विषय है। अंत्योदय अन्न योजना ने चावल और गेहूँ जैसे आवश्यक खाद्यान्नों को किफायती दामों पर उपलब्ध कराकर इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भोजन की नियमित उपलब्धता ने पोषण संबंधी बेहतर सेवन को बढ़ावा दिया है, जिससे कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं में कमी आई है। बेहतर खाद्य सुरक्षा के कारण हिमाचल प्रदेश में बच्चों में बौनेपन और महिलाओं में एनीमिया के मामलों में भी कमी देखी गई है। अंत्योदय अन्न योजना के साथ मिलकर सरकारी हस्तक्षेपों ने राज्य के सबसे गरीब परिवारों की समग्र पोषण स्थिति को मज़बूत किया है। इसके अतिरिक्त, संतुलित आहार और पूरक खाद्य कार्यक्रमों के महत्व के बारे में जागरूकता अभियानों ने योजना की प्रभावशीलता को बढ़ाया है।

खाद्य सुरक्षा और पोषण में सुधार हिमाचल प्रदेश में एक चुनौतीपूर्ण भूगोल है जो खाद्य वितरण को कठिन बना देता है। हालांकि, एएवाई ने यह सुनिश्चित किया है कि दूरदराज के गांवों में भी सस्ती खाद्यान्नों की पहुंच हो। इस योजना ने गरीब परिवारों में आहार संबंधी आदतों में सुधार किया है, क्योंकि लगातार भोजन की उपलब्धता ने भुखमरी और कुपोषण के मामलों को कम कर दिया है। सरकारी रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि हिमाचल प्रदेश में बच्चों में स्टंटिंग और कम वजन की व्यापकता में गिरावट आई है, आंशिक रूप से एएवाई जैसे खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों के कारण।

## क्रियान्वयन में चुनौतियां

इसके सकारात्मक प्रभाव के बावजूद, हिमाचल प्रदेश में एएवाई कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। एक प्रमुख मुद्दा लाभार्थियों की पहचान है, क्योंकि उचित दस्तावेज या प्रशासनिक अक्षमताओं की कमी के कारण कुछ पात्र परिवारों को शामिल नहीं किया जा सकता है। एक और चिंता दूरदराज और पहाड़ी क्षेत्रों में खाद्यान्नों के परिवहन और वितरण की है, जहां पहुंच एक चुनौती बनी हुई है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) में रिसाव और कुछ स्तरों पर भ्रष्टाचार भी लाभों के प्रभावी वितरण में बाधा डालता है। इन मुद्दों से निपटने के लिए, सरकार ने बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और इलेक्ट्रॉनिक राशन कार्ड सहित डिजिटलीकरण और पारदर्शिता उपायों की दिशा में काम किया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि केवल योग्य लाभार्थियों को ही सहायता मिले। राजनीतिक जागृति और सामाजिक सशक्तिकरण एएवाई के कार्यान्वयन ने हाशिए के समुदायों के बीच उनके अधिकारों और अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाई है। कई लाभार्थी राजनीतिक रूप से सक्रिय हो गए हैं, कल्याणकारी योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन और सरकारी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता की मांग कर रहे हैं।

राजनीतिक दलों और नेताओं ने चुनाव अभियानों में एएवाई की सफलता का लाभ उठाया है, इसे मतदाता समर्थन हासिल करने के लिए प्रभावी शासन के उदाहरण के रूप में उपयोग किया है।

## चुनौतियां और सीमाएं

कुछ पात्र परिवारों को गलत पहचान के कारण छोड़ दिया जाता है, जबकि कुछ अपात्र परिवारों को प्रशासनिक चूक के कारण लाभ हो सकता है। हिमाचल प्रदेश के दूरदराज के इलाकों में, खराब परिवहन सुविधाएं कभी-कभी खाद्यान्न वितरण में देरी का कारण बनती हैं। कुछ लाभार्थियों को योजना के लाभों के बारे में पूरी जानकारी नहीं है, जिससे कम उपयोग हो रहा है। महत्वपूर्ण सुधारों के बावजूद, प्रणाली में रिसाव की खबरें हैं जहां रियायती अनाज को इच्छित लाभार्थियों तक पहुंचने से पहले मोड़ दिया जाता है।

**सुझाव:** हिमाचल प्रदेश में अंत्योदय अन्न योजना ने गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और राजनीतिक जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के दृष्टिकोण के साथ प्रतिध्वनित है। हालांकि, इसके प्रभाव को बढ़ाने के लिए, सरकार को निम्नलिखित उपाय करने चाहिए: बहिष्करण त्रुटियों को कम करने और सबसे योग्य परिवारों को लाभ सुनिश्चित करने के लिए लाभार्थियों का चयन करने की प्रक्रिया को मजबूत करें। खाद्यान्नों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में भंडारण और परिवहन बुनियादी ढांचे में वृद्धि। योजना के प्रावधानों के बारे में लाभार्थियों को शिक्षित करने और इसके लाभों का लाभ उठाने के तरीके के बारे में सामुदायिक 'आउटरीच' कार्यक्रम आयोजित करना। भ्रष्टाचार को कम करने और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए खाद्य वितरण की निगरानी में पंचायतों, स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सहायता समूहों को शामिल करें। अंत्योदय दृष्टिकोण समकालीन नीति निर्माण में अत्यधिक प्रासंगिक बना हुआ है, जो समावेशी विकास के लिए एक मॉडल पेश करता है व सबसे वंचितों के कल्याण को प्राथमिकता देता है। भारत में सतत विकास और सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए इस ढांचे पर भविष्य की नीतियों का निर्माण जारी रखना चाहिए। हिमाचल प्रदेश में अंत्योदय अन्न योजना की सफलता एक मूल्यवान केस स्टडी के रूप में कार्य करती है, यह दर्शाती है कि कैसे लक्षित कल्याणकारी कार्यक्रम जीवन को बदल सकते हैं और समुदायों को सशक्त बना सकते हैं।

## सन्दर्भ:

1. सरवन, एस. एस. बी. (2021). भारत की सर्वांगीण उन्नति का मंत्र: अंत्योदय. प्रभात पेपरबैक्स।

2. झा, पी. (2018). अंत्योदय: समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प. प्रभात प्रकाशन।

3. चतुर्वेदी, एम., & चतुर्वेदी, पी. (2018). पंडित दीन दयाल उपाध्याय: कुशल संगठक. श्रुति पुस्तकें।

4. उपाध्याय, डी. (1965). एकात्म मानववाद. भारतीय जनसंघ प्रकाशन।

5. मधोक, बी. (1978). भारतीय राजनीतिक चिंतन: दीनदयाल उपाध्याय. एस. चंद एंड कंपनी।

6. ठाकुर, आई. एस., & सिंह, जे. के. (2019). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति और वांग्मय (खंड 2). संजय साहित्य भंडार।

7. सिंह, एस. (2020). पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन. IOSR International Journal of Humanities and Social Science, 25(8), 62–71।

8. निशंक, आर. पी. (2016). आधुनिक भारत के चाणक्य: पंडित दीनदयाल उपाध्याय. डायमंड पॉकेट बुक्स।

9. पांडे, पी. के. (2020). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: राजनीतिक जीवन. International Journal of Social Science and Educational Research, 2(1), 22–26।

10. चाणक्य वार्ता. (2025, फ़रवरी 1–15). कांग्रेस और संघ: एक सिंहावलोकन. वर्ष 10(अंक 03), 1–38।

11. ई-पीडीएस पोर्टल, हिमाचल प्रदेश. (n.d.). Retrieved from https://epds.nic.in/

1 शोधार्थी, दीनदयाल उपाध्याय पीठ, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 171005. ईमेल:

2 सह-प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग (सीडीओई), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 171005.